गाँठदार त्वचा रोग

हाल ही में पंजाब राज्य सरकार ने मवेशियों में **गाँठदार त्वचा रोग** की शुरुआती रोकथाम हेतु निःशुल्क टीकाकरण अभियान चलाने के लिये **गोट पॉक्स वैक्सीन की 25 लाख खुराकें एयरलिफ्ट की हैं।**

- गाँठदार त्वचा रोग **(Lumpy Skin Disease- LSD)** ने जुलाई 2022 में मवेशियों को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया था। पूरे पंजाब राज्य में लगभग 1.75 लाख मवेशी प्रभावित हुए थे और लगभग **18,000 मवेशियों की मौत हो गई थी**

गाँठदार त्वचा रोग:

- **कारण:**
  - LSD मवेशियों या भैंस के **लम्पी स्किन डिज़ीज़ वायरस (LSDV**) के संक्रमण के कारण होता है।
    - खाद्य और कृषि संगठन **(Food and Agriculture Organization- FAO) के अनुसार, LSD की** मृत्यु दर **10% से कम है।**
  - **'गाँठदार त्वचा रोग' को पहली बार वर्ष 1929 में जाम्बिया में एक महामारी** के रूप में देखा गया था। प्रारंभ में यह या तो ज़हर या कीड़े के काटने का अतिसंवेदनशील परिणाम माना जाता था।
- **संक्रमण:**
  - गाँठदार त्वचा रोग मुख्य रूप से **मच्छरों और मक्खियों के काटने, कीड़ों (वैक्टर) के काटने से जानवरों में फैलता है।**
- **लक्षण:**
  - इसमें मुख्य रूप से **बुखार, आँखों और नाक से तरल पदार्थ का निकलना, मुँह से लार का टपकना, शरीर पर छाले आदि लक्षण होते हैं।**
  - इस रोग से पीड़ित पशु खाना बंद कर देता है और **चबाने या खाने के दौरान समस्याओं** का सामना करता है, जिसके **परिणामस्वरूप दूध का उत्पादन कम हो जाता है।**
- **रोकथाम और उपचार:**
  - वर्तमान में भारत **LSD के लिये** गोट पॉक्स वैक्सीन **और शीप पॉक्स वायरस** के टीके लगा रहा है।
    - यह एक **हेटरोलॉगस वैक्सीन है** जो बीमारी के **खिलाफ मवेशियों को क्रॉस-सुरक्षा** प्रदान करती है।
      - **गोट पॉक्स, शीप पॉक्स और LSD** एक ही कैप्रिपोक्सवायरस जीनस से संबंधित हैं।
  - **लम्पी-प्रोवैकइंड ICAR** के **राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र और भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान** द्वारा संयुक्त रूप से विकसित एक लाइव एटेन्यूएटेड वैक्सीन है, जिसे LSD वायरस के खिलाफ मवेशियों की रक्षा के लिये लक्षित किया गया है **और 100% सुरक्षा प्रदान करती है।**
    - **कुछ महीनों में इसे व्यावसायिक रूप से लॉन्च किये जाने की उम्मीद है।**
  - गाँठदार त्वचा रोग के उपचार के लिये कोई विशिष्ट एंटीवायरल दवा उपलब्ध नहीं है। इसका उपलब्ध एकमात्र उपचार मवेशियों की उचित देखभाल है।
    - इसमें घाव देखभाल, स्प्रे का उपयोग करके त्वचा के घावों का उपचार और द्वितीयक त्वचा संक्रमण तथा निमोनिया को रोकने के लिये एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग शामिल हो सकता है।
    - प्रभावित जानवरों की भूख को बनाए रखने के लिये एंटी-इंफ्लेमेटरी (Anti-Inflammatories) दर्द निवारक दवाओं का उपयोग किया जा सकता है।

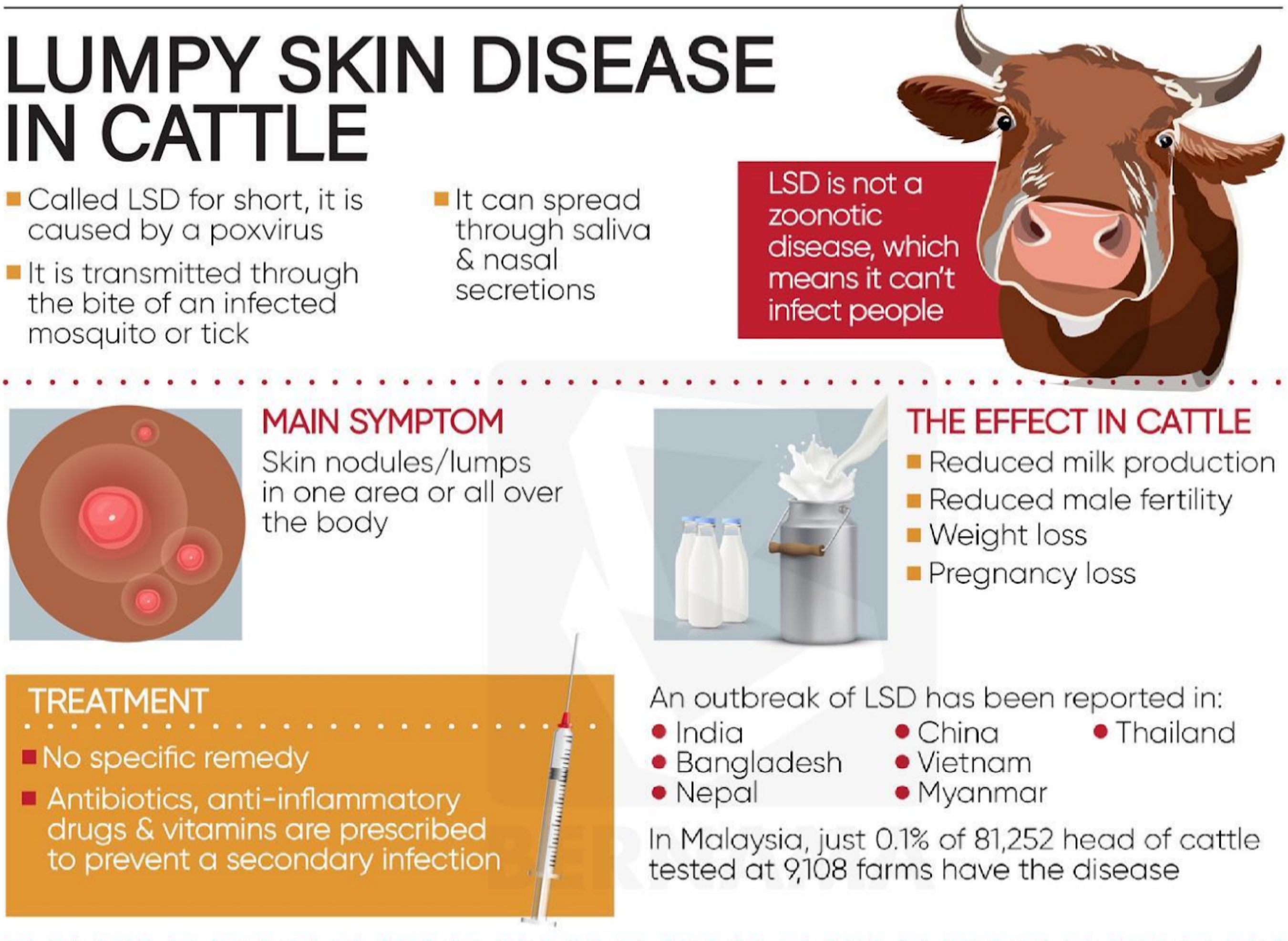

//

स्रोत: द प्रिंट

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/lumpy-skin-disease-2